दैनिक दबंग दुनिया
निष्पक्ष नज़र, निष्पक्ष खबर
16 th feb2022

निकम्मे नगरसेवकों को पवेलियन का रास्ता दिखाने की तैयारी !

दबंग रिपोर्टर >> **मुंबई**

आगामी मनपा चुनाव के मद्दे नजर शहर व उप नगरों के बुद्धिजीवियों व प्रबुद्ध नागरीकों सहित विभिन्न सुविधाओं से वंचित नागरिकों ने मुंबईकरों से अपील की है कि निकम्मे नगरसेवकों को इस बार पवेलियन का रास्ता दिखाना जरूरी है। क्योंकि 2017 में चुनाव जीतने के बाद से लापता नगरसेवक अब एक के बाद एक नई-नई योजनाओं का शिलान्यास कर रहे हैं। आखिर ये सभी अब तक कहां थे? विकास के नाम पर वोट मांगने वाले समय पर लापता रहते हैं। इन्हीं कारणों से प्रजा फाउंडेशन और एक निजी संस्था द्वारा सर्वे रिपोर्ट में ए, बी और सी को छोड़ कर डी, ई और एफ को निकम्मे नगरसेवकों की श्रेणी में रखा है। गौरतलब है कि गैर सरकारी संस्था प्रजा फाउंडेशन और एक निजी संस्था के सर्वे रिपोर्ट में ए, बी और सी को छोड़ कर डी, ई और एफ ग्रेड के नगरसेवकों को निकम्मा नगरसेवक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रजा फाउंडेशन के अनुसार मुंबई के कुल 227 वार्डो के नगरसेवकों के घोषणा पत्रों के आधार पर बारिकी से निरिक्षण किया जाता है। इसके अलावा मनपा के स्टैंडिंग कमेटी में उपस्थिति और जनहीत के सवालों पर भी नजर रखी जाती है कि किस नगरसेवक ने क्या -क्या प्रश्न उठाए हैं। इसके अलावा प्रजा फाउंडेशन का अपना भी एक पैमाना है। उक्त पैमाने पर उतरने वाले नगरसेवकों को ही ग्रेड वाइस किया जाता है। इस निरिक्षण के दौरान नगरसेवकों के नागरीकों के साथ व्यावहार और क्षेत्रिय जनता की उचित मांगों के साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि उसने अपने वार्ड में नया क्या किया है। प्रजा फाउंडेशन के पैमाने पर खरा उतरने वाले नगरसेवकों को ही ए , बी और सी कैटिगिरी में रखा जाता है। इसके बाद वाले सभी लगभग निकम्मे ही कहलाते हैं। खैर पांच वर्षो के कार्यकाल में किस नगरसेवक ने क्या उपलब्दी हांसिल किया इसका पूरा लेखा-जोखा फाउंडेशन की ऑन लाईन व किताबों में देखने को मिल सकता है। ऐसे में अगर किसी को फाउंडेशन कि कार्य प्रणाली पर संदेह हो तो, बेशक उसकी जांच की जा सकती है। गौरतलब है कि आगामी मनपा चुनाव को देखते हुए हाल के दिनों में विभिन्न वार्डो के नगरसेवकों द्वारा मतदाताओं को रिझाने के लिए नई -नई योजनाओं का शिलान्यास किया जा रहा है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि अब तक कहां थे? इन्हीं कारणों से शहर व उप नगरों के नागरीकों सहित विभिन्न सुविधाओं से वंचित लोगों ने मुंबईकरों से अपील की है कि निकम्मे नगरसेवकों को इस बार पवेलियन का रास्ता दिखाना है। 2017 के चुनाव में जिस घोषणा पत्र के आधार पर मतदाताओं से वोट मांगा गया था उसका क्या हुआ? मुंबई के कुल 227 वार्डो की लाखो मुंबईकरों को इस बात की भी शिकायत रहती है कि उनका नगरसेवक जनता के फोन नहीं उठाते। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मुंबई की एक सामाजिक संस्था फोन नहीं उठाने वाले नगरसेवक और विधायकों का सर्वे कर रही है। उसे भी जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा। कयास लगाया जा रहा है कि आगामी मनपा चुनाव में नगरसेवकों को मतदाताओं के तीखे सवालों का सामना करना पड़ सकता है। खास तौर पर उन नगरसेवकों को जो हाल के दिनों में विकास के नाम पर नई-नई योजनाओं का शिलान्यास कर रहे हैं।